कोविड–19 और सामाजिक परिवर्तन

डॉ. प्रवेश पाण्डेय
राजनीति विभाग विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

सारांश :– परिवर्तन प्रकृति का नियम है यह शास्वत सत्य है। आज पूरी दुनिया एक ऐसे परिवर्तन से जूझ रही है जो किसी प्रकृति के द्वारा परिवर्तित नहीं है बल्कि व्यक्ति द्वारा परिवर्तित दशा है। और जिसके कारण परिवर्तन हुआ वह कोरोना वायरस है। इससे केवल एक देश नहीं बल्कि पूरी दुनिया इससे प्रभावित हुई है। प्रभाव इतना गंभीर है कि लाखों लोगों को इस महामारी ने अपनी चपेट में ले लिया है। अभी तक इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है। इलाज केवल सामाजिक दूरी बनाने से है। मतलब सामाजिक दूरी बनाकर इसके संक्रमण से बचा जा सकता है।

मुख्य शब्द :– कोविड–19, सामाजिक परिवर्तन, महामारी, उन्माद, सामाजिक संरचना, मानसिक अवसाद, असमानता, आर्थिक संकट, अमानवीयता, पलायन।

प्रस्तावना :– कोरोना संक्रमण ने आज विश्व में जो स्थिति पैदा की है वैसी स्थिति अभी तक इतनी भयानक अवस्था में कोई भी संक्रमण कभी भी नहीं रहा। संक्रमण इतना ज्यादा है कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के संपर्क में आने से संक्रमित हो रहा है। पूरी दुनिया को इस संक्रमण ने घुटने के बल पर लाकर खड़ा कर दिया है। समझ में नहीं आ रहा है कि व्यक्ति किधर जाए। ऐसा नहीं है कि इसके पहले संक्रमण नहीं था। दुनिया इसके पहले कई संक्रमण से गुजर चुकी है। जिसमें प्रमुख रूप से – हैजा, पीलिया, पोलियो, स्वाइन फ्लू, वर्ड फ्लू, इवोला, एड्स आदि है। लेकिन मानव को इतना मजबूरी में किसी संक्रमण ने नहीं डाला जितना कि कोरोना संक्रमण ने, विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी इसको महामारी के रूप में परिभाषित किया है।

परिवर्तन और सामाजिक परिवर्तन में अंतर स्पष्ट किया जा सकता है, परिवर्तन जहां समस्त परिवर्तन (प्रकृति, जलवायु, भौतिक, आर्थिक, राजनीतिक) से लिया जाता है। जबकि सामाजिक परिवर्तन सिर्फ समाज में हुए बदलाव से लिया जाता है। सवाल यह उठता है कि समाज में क्या परिवर्तन हो रहा है या हुआ है.... यह बात स्पष्ट तौर पर दिखाई पड़ रही है। आज समूचा विश्व एक–दूसरे से दूर जा रहा है। आज आदमी–दूसरे आदमी से दूर होता जा रहा है और यही बचाव का रास्ता बचा हुआ है। व्यक्ति–व्यक्ति के संपर्क में आने से संक्रमित हो रहा है। इसीलिए पूरी दुनिया सामाजिक दूरी का पालन करने के लिए मजबूर है।

क्या है कोरोना संक्रमण :– कोविड–19 वायरस अलग–अलग लोगों को अलग–अलग तरह से प्रभावित करता है। यह ऐसा वायरस है जिसके सामान्य लक्षण में – बुखार, सूखी

खांसी, थकान, खुजली और दर्द, गले में खराश, दस्त, आंख आना, सिरदर्द, बेस्वाद आदि है। जबकि गंभीर लक्षण में – सांस की तकलीफ, सीने में दर्द, कमजोरी लगना है। कभी–कभी यह संक्रमण 5–6 दिन में दिखाई देता है और कभी यह 14 दिन में दिखाई पड़ता है, और कभी इसके कोई लक्षण ही दिखाई नहीं पड़ते है। भारत में यह लक्षण ज्यादा दिखाई पड़ रहा है।

कहाँ से आया कोरोना संक्रमण :– आज पूरी दुनिया इस बात का पता लगाने में जुटी है कि आखिर में यह संक्रमण आया कहाँ से। कई शोधकर्ताओं का मानना है कि कोरोना वायरस चमगादड़ से इंसानों में फैला है। शोधकर्ताओं ने इस बात की पुष्टि की है कि संक्रमण चीन के वुहान शहर के मीट मार्केट से फैला है। लेकिन दुनिया के कई विद्वान यह मानते है कि यह चीन की वुहान लैब से बनाया गया वायरस है। लेकिन चीन इन सब बातों को बेबुनियाद बताता है। अमेरिका जैसा शक्तिशाली राष्ट्र इस वायरस का जिम्मेदार चीन को मानता है।

कोरोना संक्रमण का प्रभाव :– कोरोना संक्रमण प्रभाव आज पूरे विश्व में अपना पैर पसार चुका है इस संक्रमण ने दुनिया में कोहराम मचा रखा है लाखों लोगों की जान चली गई है और करोड़ों लोग इससे संक्रमित हैं। जो इस आँकड़े से समझा जा सकता है। 20 जुलाई 2020 तक इसका कितना प्रभाव रहा है वह निम्नलिखित रूप से इन आंकड़ों से समझा जा सकता है।

विश्व पर कोराना का प्रभाव

कुल संक्रमित व्यक्तियों की संख्या	विश्व में मृत व्यक्तियों की संख्या	नए संक्रमित व्यक्तियों की संख्या
14,538,094	607,358	189,236

स्त्रोत :– विश्व स्वास्थ्य संगठन दिनांक – 20.07.2020 रिपोर्ट

विश्व के प्रमुख राष्ट्रों पर इसका प्रभाव

देश	कुल संक्रमित व्यक्तियों की संख्या	मृत व्यक्तियों की संख्या	नए संक्रमित व्यक्तियों की संख्या
अमेरिका	3,748,248	139,964	62,788
ब्राजील	2,098,389	79,488	23,529
भारत	1,155,191	28,084	37,148
रशिया	777,486	12,427	6836
यू.के.	294,796	45300	36053

चीन	14,538,094	607,358	189,236
इटली	244,434	35045	62181

स्त्रोत :– विश्व स्वास्थ्य संगठन दिनांक – 20.07.2020 रिपोर्ट

इन आंकड़ों का विश्लेषण करने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इस संक्रमण ने पूरे विश्व को अपनी चपेट में ले चुका है। कोई भी राष्ट्र इस महामारी से बचा नहीं है, इस संक्रमण से व्यक्तियों की मृत्यु तो हुई है इसके साथ ही साथ सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक तथा मानसिक स्थिति पर भी इसका गहरा प्रभाव देखने को मिल रहा है जिसका विश्लेषण आगे किया जा रहा है –

असमानता को बढ़ावा :– कोरोना संक्रमण ने समाज में असमानता को जन्म दिया है। जहां पहले समाज व्यक्ति के सामूहिक संरचना से था। वहीं आज यह समाज विरक्त नजर आ रहा है। विरक्तता में छुआछूत जैसी अवधारणा ने जन्म ले लिया है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को शंका की दृष्टि से देख रहा है। राज्य सरकारें अपने–अपने लोगों को सुरक्षित करने में लगी हैं, जबकि यह काल अपनों एवं परायों से नहीं है सभी मानव है सभी को सुरक्षित रखना सरकारों का कर्तव्य है।

गरीबी में बढ़ोत्तरी :– इस संक्रमण ने सबसे ज्यादा प्रभाव समाज के छोटे तबकों पर पड़ा है। दुनिया में गरीबी बढ़ी है जो व्यक्ति रोज कमाता–खाता था उस व्यक्ति का सारा आशियाना उजड़ गया। समाज में गरीबी बढ़ी है, आज फिर समाज में गरीब और अमीर की खाई काफी गहरी होती जा रही है।

बेरोजगारी बढ़ी :– दुनिया में वैसे ही बेरोगारी विद्धमान रही है, कोरोना संकट काल में इसमें बेतहाशा इजाफा हुआ है। पूरी दुनिया में लगभग काम बंद चल रहा है। लोगों को काम से निकाल दिया गया है या लोग खुद छोड़कर भाग रहे हैं, साथ ही साथ यह भी डर सता रहा है कि किसी तरीके से लांग अपने–अपने घर पहुँच जॉये।

मजदूरों का पलायन :– कोविड–19 का संक्रमण लगातार बढ़ता चला जा रहा है और इसका प्रभाव सबसे ज्यादा मजदूरों पर पड़ा है। मजदूर का काम–काज बंद हो जाने से और लॉकडाउन की वजह से मजदूर अपने–अपने घर वापसी के लिए मजबूर हैं। इस पलायन का रास्ता बड़ा ही कठिन और मार्मिक है। इस संक्रमण ने लोगों को पैदल चलने के लिए मजबूर कर दिया है। चूंकि राज्यों की सीमाएं लगभग सील हो गई हैं इस वजह से यातायात के साधन बंद पड़ गए, जिससे इन प्रवासी मजदूरों को हजारों किलोमीटर का रास्ता पैदल ही चलकर पूरा करना पड़ रहा है। हालांकि केन्द्र के द्वारा, राज्य सरकारों को निर्देशित किया गया है, लेकिन कई राज्य सरकारों के द्वारा इसमें हीला–हवाली की जा रही है। दिल्ली, मुम्बई, हैदराबाद, कोलकाता से हजारों मजदूर अपने–अपने घर लौटने के लिए मजबूर हैं।

मार्मिक विचार यह है कि मजदूरों को घर वापसी को लेकर भी राजनीति हो रही है। यह बात समझ में नहीं आती कि मजदूर तो मजदूर हैं इसमें इन मजदूरों का क्या कसूर है कि वह दो वक्त की रोटी के लिए इन शहरों में आए थे। सवाल यह है कि क्या कभी भी इन मजदूरों से कोई काम नहीं पड़ेगा इनकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी, यह तो वक्त ही बताएगा।

मानसिक अवसाद :– कोरोन संक्रमण ने न केवल शारीरिक अवसाद पैदा किया बल्कि मानसिक अवसाद ज्यादा पैदा किया है। व्यक्ति मानसिक रूप से डरा हुआ प्रतीत हो रहा है। और यह डर व्यक्ति के अंदर तक घर कर लिया है। व्यक्ति इस सोच में पड़ा है कि वह क्या करे, क्या न करें। किससे मिलें किसने न मिले, कहां जाए, कहाँ न जाए, यह तमाम उलझने व्यक्ति को झकझोर रही हैं। व्यक्ति अपनों से डरने लगा है। यह क्या स्थिति आ गई है जहाँ लोग अपनो के भावों को भी नहीं ले जाना चाह रहे हैं। इससे बड़ी विडम्बना क्या हो सकती है। इटली, जर्मनी, अमेरिका में तो ऐसे ही हालात बने हुए है। समूचा विश्व इस अवसाद से गुजर रहा है। मन, शक्ति, हिम्मत लगभग टूटने लगा है। आदमी आराम करके, घर में रहकर थक चुका है वह अब इससे बाहर निकलना चाहता है। फिर से उस समाज में आना चाहता है जिसमें सामाजिक दूरी जैसा कोई बंधन नहीं हो। व्यक्ति फिर से वैसा वातावरण निर्मित करना चाहता है जिसमें कोई रोक–टोक न हो। कोई प्रतिबंध न हो। इस प्रतिबंध ने मनुष्य को शिथिल बना दिया है। नहीं तो मनुष्य सदैव गतिशील रहा है। व्यक्ति की सोच, विचार, व्यवहार, तरीका, रहन–सहन सब गतिशील रहा है। 'रूका कब' था? लेकिन अब चहारदीवारी में रहने के लिए मजबूर है। इससे हमें निकलना होगा।

सरकारों के लिए चुनौती :– कोरोना संक्रमण केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकारों के लिए एक गंभीर चुनौती बनकर आया है। यह चुनौती कोई सामान्य नहीं है। इस संक्रमण से कैसे निकला जाए यह कौतुहल का विषय बना हुआ है। आज पूरी दुनिया में स्वास्थ्य एक प्रमुख विषय बन गया है। आने वाले चुनावों में स्वास्थ्य एक प्रमुख मुद्दा होगा। चूंकि अभी तक सरकारों का ध्यान इस तरफ नहीं था लेकिन अब होगा। सरकार के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती इस संक्रमण से लोगों को कैसा बचाया जाए, लोगों के लिए खाने–पीने, रहने की व्यवस्था कैसे की जाए। सामाजिक दूरी फिस तरह बनी रहे इसकी भी चुनौती इन सरकारों पर है। सरकार लगातार इस दिशा में प्रयास कर रही है। तमाम उद्योग, व्यापार, बाजार, उत्पादन सभी बन्द पड़े हैं यह भी बड़ी चुनौती साबित हो रही है। सरकारें किस तरह से इन सबका पुनः संचालन करेगी यह भी बड़ी चुनौती है। हालांकि व्यापार, बाजार से ज्यादा जरूरी व्यक्ति जीवित रहेगा तो इन सबका उपयोग और उपभोग कर पाएगा नहीं तो कैसे कर पाएगा। सरकारों का दायित्व लोगों के स्वास्थ्य के प्रति बढ़ गया है।

अर्थव्यवस्था पर दुष्प्रभाव :– कोरोना संक्रमण ने जहां एक ओर सामाजिक व्यवस्था पर दुष्प्रभाव डाला है वहीं साथ–साथ आर्थिक व्यवस्था को अतिक्रमित किया है। चूंकि पूरी दुनिया सहित भारत में बंद चल रहा है, ऐसे हालात में अर्थव्यवस्था पर इसका प्रभाव लाजिमी है।

केन्द्र सरकार द्वारा 20 लाख करोड़ का पैकेज देकर कुछ राहत का कार्य किया है लेकिन देखना यह है कि क्या इससे अर्थव्यवस्था में सुधार होगा। हालांकि इस संदर्भ में अभी कुछ कहा नहीं जा सकता है। भारत की बढ़ती अर्थव्यवस्था अचानक इस तरह से रूक जाना निश्चित ही चिंता का विषय बना हुआ है।

धार्मिक उन्माद :– कोरोना संक्रमण ने धार्मिक उन्माद को भी बढ़ावा दिया है इसका उदाहरण दिल्ली के मस्जिदों से निकले मरकज़ के लोग हैं जो पूरे भारत में घूम–घूमकर कोरोना फैला रहे हैं। मौलाना साद आज तक पकड़ा नहीं गया है, चूंकि पूरे भारत में लाकडाउन चल रहा है ऐसे में सारी धार्मिक संस्थाएं– यथा मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे, चर्च सभी बंद चल रहे हैं ऐसे में किसी एक धर्म का प्रचार–प्रसार कहाँ तक सही है। दूसरा उदा. पालघर में हुई दो साधुओं की निर्मम हत्या से लिया जा सकता है।

दैनिक जीवन में बदलाव :– कोविड–19 ने जहाँ एक तरफ सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन पर प्रभाव डाला है। वहीं दूसरी तरफ यह हमारे दैनिक जीवन पर ज्यादा प्रभाव डाला है। और यह प्रभाव सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं से समझा जा सकता है। सकारात्मक रूप में कोविड–19 ने सभी को यह सिखाया कि हमें दैनिक जीवन में क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। कोविड–19 ने यह सिखाया कि हमें निरंतर अपने हाथों को साबुन से धोना चाहिए, मुख पर मास्क पहनना चाहिए, एक दूसरे से दूरी बनाए रखनी चाहिए, बिना वजह यहाँ–वहाँ नहीं घूमना–फिरना चाहिए। यही नहीं खाँसते और छींकते समय मुंह पर कपड़ा या रूमाल रखना चाहिए। इन सबका यह मतलब हुआ कि कोविड–19 ने हमारी बुरी आदतों को बदला है और जीने का नया तरीका सिखाया है।

दूसरी तरफ नकारात्मक रूप में यह संक्रमण हमें समाज, राज्य और परिवार से बिरक्त करता है। आज इनती बड़ी समस्या आ खड़ी हुई कि हम अपनों के अंतिम संस्कार में भाामिल नहीं हो पा रहे है। सभी सरकारों के लिए व्यक्तियों की संख्या निर्धारित की गई है। भादी–ब्याह में 50 लोग, व्यक्ति की मृत्यु होने पर 20 लोग ही भामिल हो सकते है। सोचनीय बात है। कोविड–19 ने सामाजिक ताना–बाना पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया है। समय रहते हमें इससे निपटना पड़ेगा अन्यथा मनुश्य का अस्तित्व धीरे–धीरे समाप्त हो जाएगा।

निष्कर्ष :– आज कोविड–19 संक्रमण ने पूरी दुनिया को संकट में डाल दिया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी इस संक्रमण को महामारी घोशित किया है। यह महामारी विश्व की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और मानसिक स्थिति को प्रभावित किया है। सवाल यह उठता है कि इस स्थिति में क्या करें? तो उसका उत्तर स्पष्ट है कि हमें अपने आपको मानसिक रूप से मजबूत होना पड़ेगा। इस संक्रमण के साथ जीने की आदत डालनी पड़ेगी। सरकार के द्वारा बताए गए निर्देशों का पालन करना पड़ेगा। साफ–सफाई पर ध्यान रखना

होगा तथा दो गज की दूरी का पालन करना होगा। तभी इस संक्रमण से बचा जा सकता है। जहाँ तक सामाजिक ताने–बाने की बात है वह व्यक्ति से बनता है यदि व्यक्ति ही नहीं होगा तो इस सामाजिक व्यवस्था का कोई औचित्य नहीं होगा। सामाजिक व्यवस्था के सूचारू रूप से संचालन के लिए व्यक्ति की मानसिक स्थिति का ठीक होना आवश्यक है। निश्चित तौर पर कोविड–19 से सामाजिक परिवर्तन हुआ है इसको अनदेखा नहीं किया जा सकता है। लेकिन यह परिवर्तन भय, द्वेष, घृणा, अमानवीयता, असामाजिकता, गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी, पलायन, उन्माद जैसी परिस्थितियाँ भी पैदा किया है। अभी तक वैश्विक बाजार में इसकी रोकथाम के लिए न तो कोई दवा आई है और न कोई टीका बना हुआ है। आगे भविष्य में क्या होगा यह कोई नहीं बता सकता है। लेकिन हमें सावधान एवं जागरूक रहने की आवश्यकता है तभी हम और हमारा जीवन सुरक्षित रह पाएगा।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. पाण्डेय, विनीता, इण्डिया रैकंड एटथ इन ग्लोबल डेथ टोल, दिक्कन क्रोनिकल, 24 जून, 2020
2. हिन्दुस्तान टाइम्स, 10 जून, 2020.
3. द हिन्दू, 23 मार्च, 2020.
4. द इकोनामिक टाइम्स, 27 मार्च, 2020.
5. आउटलुक, 10 अप्रैल, 2020.
6. द इनडिपेण्डेन्ट, 10 अप्रैल, 2020.
7. भास्कर, 26 जून, 2020.
8. विश्व स्वास्थ्य संगठन रिपोर्ट, 20 जुलाई, 2020.
9. आयुष मंत्रालय/भारत सरकार रिर्पोट, 16 जुलाई, 2020.